

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, रहस्योद्घाटन और शास्त्र, सत्र 7, बाह्य सामान्य रहस्योद्घाटन, रोमियों 1:18-25 और यूहन्ना 1:3-9, आंतरिक सामान्य रहस्योद्घाटन, रोमियों 1:32-2:12-16

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा प्रकाशितवाक्य और पवित्र शास्त्र पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 7 है, बाह्य सामान्य प्रकाशितवाक्य, रोमियों 1:18-25 और यूहन्ना 1:3-9। आंतरिक सामान्य प्रकाशितवाक्य, रोमियों 1:32 और 2:12-16।

हम सृष्टि में परमेश्वर के सामान्य प्रकाशन के बारे में अपना अध्ययन जारी रखते हैं। मैंने अभी-अभी रोमियों 1:18 से 25 की व्याख्या की है। अब, आइए उस पाठ को देखें जो इस कार्य का विवरण देता है और जो मैंने कहा उसे स्पष्ट करता है।

इसी तरह पौलुस रोमियों 1 में बाहरी सामान्य प्रकाशन के बारे में बात करता है, जहाँ वह सुसमाचार के लिए दुनिया की ज़रूरत के बारे में बताता है। परमेश्वर उन लोगों के विद्रोह के विरुद्ध क्रोधित है, जो अपने अधर्म से सत्य को दबाते हैं। पद 18, जिस सत्य के बारे में पौलुस बोलता है, वह सृष्टि में परमेश्वर का प्रकाशन है।

"उसके अदृश्य गुण, अर्थात् उसकी सनातन सामर्थ्य और ईश्वरीय स्वभाव, उसकी बनाई हुई चीज़ों से स्पष्ट रूप से देखे और समझे जा सकते हैं।" पद 20 में, पौलुस परमेश्वर के अदृश्य गुणों के बारे में बात करता है जो स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। वह समझाता है कि परमेश्वर का चरित्र, विशेष रूप से उसकी सनातन सामर्थ्य और ईश्वरीय स्वभाव, उसकी सृष्टि के माध्यम से प्रकट होते हैं।

इसके अलावा, ये विशेषताएँ दुनिया के निर्माण के समय से ही प्रकट की गई हैं। श्लोक 20, इसे हमारे सामान्य प्रकाशन के सिद्धांत के लिए एक साथ रखते हुए, हम सीखते हैं कि ए, प्रकाशन का तरीका ईश्वर की रचना है। बी, विषयवस्तु ईश्वर की शाश्वत शक्ति और दिव्य प्रकृति है, जिसका अर्थ है कि ईश्वर सृष्टिकर्ता है और वह विस्मयकारी, शक्तिशाली और दिव्य है।

1:20. सी, रहस्योद्घाटन का समय स्थिर है, जो सृष्टि के समय से ही घटित हो रहा है। डी और डी, विस्तार सार्वभौमिक है, जो प्रत्यक्ष कथन द्वारा नहीं, बल्कि निहितार्थ द्वारा सृष्टि तक फैलता है।

यहाँ सामान्य प्रकाशन पर पौलुस की शिक्षा भजन 19 में दी गई शिक्षा से बहुत मिलती-जुलती है। मुख्य अंतर यह है कि भजन 19 परमेश्वर के वाचा के लोगों के संदर्भ में सामान्य प्रकाशन की बात करता है। यह एक बहुत अच्छी बात है क्योंकि भजन 19 और पद 7 प्रभु की व्यवस्था की बात करते हैं।

और वास्तव में, परमेश्वर का नाम एलोहिम से बदलकर यहोवा कर दिया गया है, उस पूरे खंड में जो उसके वचन में परमेश्वर के प्रकाशन की बात करता है। मुख्य अंतर यह है कि भजन 19 परमेश्वर के वाचा के लोगों के संदर्भ में परमेश्वर के सामान्य प्रकाशन की बात करता है, जिन्होंने विशेष प्रकाशन, परमेश्वर का वचन भी प्राप्त किया है। भजन 19 एक दाऊदी भजन है जो परमेश्वर की स्तुति करता है और उसकी सृष्टि और उसके वचन के माध्यम से उसकी गवाही का आनंद लेता है।

परमेश्वर के लोगों की परमेश्वर के प्रकाशन के प्रति प्रतिक्रिया में आराधना, आनन्द, श्रद्धा, बुद्धि, प्रसन्नता, स्वीकारोक्ति और प्रार्थना शामिल है, जैसा कि भजन 19 के अंत में दिखाया गया है। रोमियों 1 में संदर्भ काफी अलग है, जहाँ सामान्य प्रकाशन पर पौलुस की शिक्षा दर्शाती है कि सभी लोग “बिना किसी बहाने के” हैं और उन्हें उद्धार के संदेश की आवश्यकता है। श्लोक 20.

यह कैसे काम करता है? पॉल बताते हैं कि यह रहस्योद्घाटन लोगों तक पहुँचता है ताकि वे जान सकें कि परमेश्वर एक शक्तिशाली देवता है। पॉल इस बात को उजागर करने के लिए बहुत आगे तक जाता है। परमेश्वर के बारे में सच्चाई जानी जाती है, स्पष्ट होती है, दिखाई देती है, स्पष्ट रूप से दिखाई देती है और समझी जाती है।

श्लोक 18 से 21. लेकिन मानवता की प्रतिक्रिया सत्य को सक्रिय रूप से दबाना है। श्लोक 18.

यद्यपि परमेश्वर उन्हें अपना रहस्योद्घाटन बताता है, फिर भी वे परमेश्वर के रूप में उसकी महिमा नहीं करते या आभार प्रकट नहीं करते। इसके बजाय, उनकी सोच व्यर्थ हो गई, और उनके मूर्ख हृदय अंधकारमय हो गए। बुद्धिमान होने का दावा करते हुए, वे मूर्ख बन गए और अमर परमेश्वर की महिमा को मूर्तियों के लिए बदल दिया।

उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को झूठ से बदल दिया और सृष्टिकर्ता की जगह जो बनाया गया है उसकी पूजा और सेवा की, जिसकी सदा स्तुति होती है। श्लोक 21 से 23 और 25। पतन के बाद से, मनुष्य स्वयं परमेश्वर के बाहरी सामान्य प्रकाशन के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं देते हैं।

हालाँकि सृष्टि के समय से ही हर जगह इस तरह का रहस्योद्घाटन किया गया है और हालाँकि परमेश्वर ने इसे सभी के लिए स्पष्ट कर दिया है, फिर भी पापी सृष्टि में परमेश्वर के इस ज्ञान को उतना महत्व नहीं देते जितना उन्हें देना चाहिए। वे लगातार इसे दबाते रहते हैं। वे परमेश्वर को धन्यवाद नहीं देते या उसकी महिमा नहीं करते।

इसके बजाय, उनके विचार मूर्खतापूर्ण हो गए, और उनके हृदय अंधकारमय हो गए। वे बुद्धिमान होने का दावा करते हैं, लेकिन वास्तव में, वे मूर्ख हैं और पाप करते हैं। आयत 21 से 25।

परिणामस्वरूप, परमेश्वर पापियों का न्यायपूर्वक न्याय करता है। श्लोक 18. वह पुरुषों और महिलाओं के सभी अधर्म और अधर्म के विरुद्ध स्वर्ग से अपना क्रोध प्रकट करता है।

वह उन्हें बिना किसी बहाने के मानता है, पद 20। वह मानवजाति को मूर्तिपूजा के लिए छोड़ देता है - पद 23।

नैतिक भ्रष्टता। 24 से 27. समलैंगिक व्यवहार और भ्रष्ट मन का प्रतीक।

पद 28. इस प्रकार, रोमियों 1 भजन 19 की सामान्य प्रकाशन की शिक्षा को दोहराता है, साथ ही दो सत्य जोड़ता है। सबसे पहले, सामान्य प्रकाशन हमें परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी बनाने के लिए पर्याप्त रूप से स्पष्ट है।

दूसरा, सामान्य प्रकाशन अपने आप में पापियों को परमेश्वर में विश्वास की ओर नहीं ले जाता। दुख की बात है कि पतन के बाद से, जब परमेश्वर के बारे में स्पष्ट सत्य का आशीर्वाद मिला, पापियों ने दृढ़ता से उसे और उसके सत्य को दबा दिया। यूहन्ना 1, 3 से 9 हमारा तीसरा सामान्य प्रकाशन पाठ है।

यूहन्ना 1:3 से 9. मैं 1 से 9 तक पढ़ता हूँ। शुरुआत में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। वह शुरुआत में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसके द्वारा बनाया गया था, और उसके बिना, कुछ भी नहीं बनाया गया था।

उसमें जीवन था, और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी। ज्योति अंधकार में चमकती है, और अंधकार ने उस पर विजय नहीं पाई। परमेश्वर की ओर से एक मनुष्य भेजा गया जिसका नाम यूहन्ना था।

वह प्रकाश के बारे में गवाही देने के लिए एक गवाह के रूप में आया था ताकि सभी उसके माध्यम से विश्वास कर सकें। वह प्रकाश नहीं था, लेकिन प्रकाश की गवाही देने के लिए आया था। सच्चा प्रकाश, जो सभी को प्रकाश देता है, दुनिया में आ रहा था।

यह जॉन के सुसमाचार की प्रसिद्ध प्रस्तावना का हिस्सा है, जो चौथे सुसमाचार के कई विषयों का परिचय देता है। इसका मुख्य विषय परमेश्वर के पुत्र का अवतार है। यह सत्य बाकी सुसमाचार में दोहराया नहीं गया है।

यह माना जाता है। जब यूहन्ना त्रिएकत्व के दूसरे व्यक्ति का उल्लेख करता है, तो वह उसे पुत्र नहीं कहता। वह पद 9 और 14 में उसके अवतार की बात करता है, लेकिन पद 17 में इस अंश में बाद में उसका नाम, यीशु मसीह, इस्तेमाल नहीं करता।

इससे पहले, वह उसी व्यक्ति को संदर्भित करता है जो ईश्वरत्व का दूसरा व्यक्ति है, ईश्वर पुत्र, जो अपने मानव नाम, मसीहा मसीहा में, अपने अवतार में यीशु बन गया, लेकिन यूहन्ना उसे यीशु नहीं कहता। कभी-कभी, हमारा इरादा अच्छा होता है, और हम कहते हैं कि शुरुआत में, पद 1 और पद 14 शब्द देहधारी हुए, और हम जानते हैं कि वह यीशु है, इसलिए शुरुआत में, यह यीशु था। इस मामले की सच्चाई यह है कि वचन और यीशु के बीच निरंतरता है, लेकिन यूहन्ना यह नहीं कहता कि वह यीशु था।

वास्तव में, यूसुफ और मरियम दोनों को शिशु का नाम यीशु रखने के लिए कहा गया था। यीशु अनंत काल के परमेश्वर के सनातन पुत्र का नाम नहीं है। यह उसका मानवीय नाम बन जाता है

और हमेशा के लिए उसका नाम बन जाता है, और मैं इसे फिर से कहूँगा: सनातन पुत्र और चरनी में बच्चे के बीच व्यक्तित्व की निरंतरता है।

लेकिन यूहन्ना दूसरे व्यक्ति को शब्द और प्रकाश कहता है। सुसमाचार के पहले पाँच पदों में वह उसे पुत्र या मसीह या यीशु नहीं कहता। वास्तव में, सुसमाचार के पहले नौ पदों में।

हमें 17वें श्लोक तक यीशु मसीह का नाम नहीं मिलता। आरंभ में वचन था। यूहन्ना बाइबल के ही पहले शब्दों, हिब्रू पुराने नियम का उल्लेख करता है, जिसे कोई भी यहूदी जानता होगा।

किसी भी ईसाई का किसी भी गैर-यहूदी के साथ किसी भी तरह का संपर्क या आराधनालय के साथ किसी भी तरह का संपर्क होना इसे जानता होगा। शुरुआत में, भगवान। जॉन ने टोरा की बाइबिल की पहली आयत में ही शब्द को भगवान के स्थान पर रख दिया, जो कि शब्द के ईश्वर होने से पहले ही शब्द के देवता होने का संकेत देता है।

शुरुआत में परमेश्वर ने सृष्टि की और शुरुआत में शब्द था। शब्द परमेश्वर के उस स्थान पर है जो परमेश्वर ने बाइबल की पहली आयत में रखा था। शुरुआत में, शब्द था, और शब्द परमेश्वर के साथ था।

एकता के सिद्धांत की मूल बातें मिलती हैं क्योंकि भाषा में शब्द के ईश्वर की उपस्थिति में होने की बात कही गई है। हम आगे बढ़ते हैं कि मामला अगले खंड से और भी जटिल हो जाता है और शब्द ईश्वर था। उत्पत्ति 1.1 में शब्द ईश्वर का स्थान लेता है। शब्द ईश्वर की उपस्थिति में था, और अब हमें बताया गया है कि शब्द ईश्वर था।

वैसे, ईश्वर का पंथिक अनुवाद बहुत गलत है क्योंकि इस पूरे अंश में एक ही शब्द, थियोस, बिना लेख के, का इस्तेमाल किया गया है, और यहां तक कि तथाकथित यहोवा के साक्षी न्यू वर्ल्ड अनुवाद भी इसे लगातार ईश्वर में अनुवाद नहीं करता है। वे 1:1 में ईश्वर कहते हैं क्योंकि वे मसीह के ईश्वरत्व को नकारते हैं, और मैं कह सकता हूँ कि पंथों में कई त्रुटियाँ हैं और उस विशेष पंथ में भी कई त्रुटियाँ हैं, जिनमें से कुछ मूर्खतापूर्ण हैं जैसे जन्मदिन या क्रिसमस न मनाना। उनमें से कुछ घातक हैं रक्त आधान स्वीकार न करना, लेकिन इनमें से कोई भी चीज़ निंदनीय नहीं है लेकिन मसीह के ईश्वरत्व को नकारना निंदनीय है।

आप कहते हैं, यह क्यों बदलता है कि वह कौन है? ओह, यह बदलता है कि मैं उसे क्या मानता हूँ, और अगर मैं महादूत माइकल, या मात्र मनुष्य यीशु, या फिर महादूत माइकल पर विश्वास करता हूँ, जो कि तीन तरीके हैं जिनसे Jews यीशु, परमेश्वर के पुत्र का वर्णन करते हैं। वह महादूत माइकल था, और उसके जीवन सिद्धांत को मनुष्य यीशु में स्थानांतरित करके, चाहे इसका जो भी अर्थ हो, कोई अवतार नहीं है। और फिर, उसे शारीरिक रूप से नहीं उठाया गया था, लेकिन उसके जीवन सिद्धांत को वापस महादूत माइकल में स्थानांतरित करके, वह आगे कहता है।

तो, आपके पास एक देवदूत है, मनुष्य, देवदूत। इनमें से किसी भी चीज़ पर विश्वास करने से बचाव नहीं होता। ईश्वर के देहधारी पुत्र पर विश्वास करने से बचाव होता है।

और जैसा कि लूथर सही कहता है, उस पर थोड़ा सा भी विश्वास, उस पर थोड़ा सा भी विश्वास बचाता है, लेकिन हे भगवान। नहीं, यूहन्ना 1:6 में बिना उपपद के उसी शब्द का उपयोग किया गया है, और कोई भी अनुवाद यह नहीं कहता कि परमेश्वर की ओर से भेजा गया एक व्यक्ति था, जिसका नाम यूहन्ना था। यह बेतुका है।

और श्लोक 12 के बारे में क्या कहा जाए : जितनों ने उसे ग्रहण किया, जिन्होंने उसके नाम पर विश्वास किया, उन्हें उसने परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया। नहीं, नई दुनिया का गलत अनुवाद भी ऐसा नहीं करता। नहीं, यह वही शब्द है, लेख के बिना भी, और उन दो स्थानों में, 12 और 6 में, जैसा कि एक में है, आपको शब्द का अनुवाद परमेश्वर था के रूप में करना चाहिए।

इस प्रकार, दो ऐसे हैं जो ईश्वर हैं, और बाइबल कभी भी यहूदी धारणा, पुराने नियम की धारणा से समझौता नहीं करती है, कि एक ईश्वर है, ईश्वर की एकता है। इस प्रकार, इस एक ईश्वर के भीतर दो हैं, जो पहले से ही यूहन्ना 1.1 में है। वह शुरुआत में ईश्वर के साथ था। सभी चीजें उसके द्वारा बनाई गई थीं, जैसे कुलुस्सियों 1 और इब्रानियों 1, इब्रानियों 1:2, कुलुस्सियों 1:16। पुत्र, जिसे यहाँ वचन कहा गया है, सृष्टि में पिता का एजेंट था।

सभी चीजें उसी के द्वारा बनाई गई हैं। यूहन्ना दिखाता है कि भाषा वास्तव में व्यापक है, सकारात्मक बातों की पुष्टि करके और नकारात्मक बातों को नकारकर। कुलुस्सियों 1 में, वह यह कहकर दिखाता है कि यह व्यापक है कि उसने सभी चीजों को दृश्यमान और अदृश्य बनाया है।

वे व्यापक श्रेणियाँ हैं। कोई तीसरी श्रेणी नहीं है; आप इसे देख सकते हैं, या नहीं देख सकते। और इसके अलावा, वह कहता है, स्वर्ग और पृथ्वी की चीजें, यह फिर से, उत्पत्ति 1:1 का एक संकेत है, लेकिन मैं यूहन्ना 1 में हूँ, सभी चीजें उसके द्वारा बनाई गई थीं, और उसके बिना कुछ भी नहीं बनाया गया था जो बनाया गया था।

सकारात्मकता की पुष्टि करते हुए, नकारात्मकता को नकारते हुए, पुत्र, पूर्व-अवतार पुत्र, अर्थात् वचन, यूहन्ना की शब्दावली को ध्यान में रखते हुए, शाश्वत वचन, जो पिता के साथ है और पिता के साथ है, जो कुछ भी बनाया गया था उसे बनाने में परमेश्वर का एजेंट था। वह सृष्टिकर्ता है। इसके अलावा, यहाँ हम सामान्य प्रकाशन की अवधारणा पर पहुँचते हैं, जिसे हमेशा मान्यता नहीं दी जाती है, लेकिन यह यहाँ श्लोक 4 में है, उसमें, वचन जो सृष्टि में पिता का एजेंट था, जीवन था।

लोकस, जीवन का स्थान, हमेशा इस्तेमाल किया जाता है; यह शब्द ज़ोए चौथे सुसमाचार में, अनन्त जीवन का है, अनन्त जीवन, जो हर सृजित चीज़ के निर्माण का स्रोत था, वचन में, पुत्र में, त्रिदेव के दूसरे व्यक्ति में निवास करता था। उसमें जीवन था, और जीवन मनुष्यों का प्रकाश था। अनन्त जीवन अनन्त शब्द में निवास करता है, जो सभी सृजित जीवन का स्रोत था, मनुष्यों का प्रकाश था।

यह एक उद्देश्य जननात्मक है, अर्थात्, प्रकाश एक सक्रिय शब्द है, और इसका अर्थ है कि प्रकाश मानव जाति पर चमकता है। शब्द में अनन्त जीवन का स्थान था। शब्द जिसने अपने

भीतर इस अनन्त जीवन के आधार पर सभी चीजों को बनाया, और शब्द में वह अनन्त जीवन, जो सृष्टि का स्रोत था, मानव प्राणियों के लिए परमेश्वर का प्रकाशन था।

इस प्रकार यूहन्ना 1:1 से 5 में सामान्य प्रकाशन सिखाता है। इसके अलावा, प्रकाश अंधकार में चमकता है। बेशक, न केवल उत्पत्ति 1, 1 को यूहन्ना 1:1 के पहले कुछ शब्दों में मौखिक रूप से संदर्भित किया गया है, बल्कि सेप्टुआजेंट, ग्रीक अनुवाद, में भी ठीक यही है, NRK, शुरुआत में, लेकिन यहाँ सृष्टि का उल्लेख किया गया है, जो उत्पत्ति 1 और 2 का विषय है, और प्रकाश और अंधकार की भाषा भी है, जहाँ परमेश्वर उत्पत्ति 1 :3 में प्रकाश बनाता है। यहाँ इसका प्रयोग रूपक के रूप में किया गया है। तो मैं जो कहने की कोशिश कर रहा हूँ वह यह है कि उत्पत्ति 1:1 और उसके बाद के अंश इस अंश में एक विशेष भूमिका निभाते हैं, वास्तव में कुलुस्सियों 1 में भी।

लेकिन यहाँ, शुरुआत में शब्दशः, सृष्टि 1, 3 की अवधारणा, और फिर प्रकाश और अंधकार की यह भाषा। उसमें जीवन था, और वह शाश्वत जीवन मनुष्य का प्रकाश था। यह सृष्टि में मनुष्यों पर चमकने वाले ईश्वर का रहस्योद्घाटन था।

वह प्रकाश अंधकार में चमकता है। यहाँ, पतन का परिचय दिया गया है। प्रकाश सृष्टि में परमेश्वर का सामान्य प्रकाशन है।

यह अंधकार में चमकता है, और अंधकार ने इसे पराजित नहीं किया है, इसे समझने से बेहतर अनुवाद है क्योंकि सुसमाचार में, अंधकार प्रकाश को समझने की कोशिश नहीं कर रहा है। यह प्रकाश को खत्म करने की कोशिश कर रहा है, जैसा कि हम अध्याय 3 में देखते हैं, उदाहरण के लिए, श्लोक 19 से 21, जिसे मैं अभी नहीं पढ़ूंगा। और दुनिया के प्रकाश के बारे में जॉन की बड़ी व्याख्या जॉन 9 है, जहाँ यीशु एक अंधे व्यक्ति को ठीक करता है।

मैंने कहा कि प्रस्तावना का मुख्य विचार अवतार है। मैं इसे संक्षेप में दिखाना चाहता हूँ। जॉन यहाँ एक उलटी समानांतरता या चियास्म का उपयोग करता है।

सबसे पहले, वह शाश्वत पुत्र को वचन के रूप में संदर्भित करता है, श्लोक 1 से 3 तक। फिर वह उसे प्रकाश कहता है, कम से कम श्लोक 7 तक। और अगर वह नियमित समानता का पालन करता, तो वह कहता कि वचन देहधारी हुआ, और ज्योति जगत में आई, लेकिन वह उन दोनों को उलट देता है। वह वचन है, 1:1 से 1:3 तक। वह ज्योति है, श्लोक 7। और फिर श्लोक 9 कहता है कि ज्योति जगत में आ रही थी। और फिर श्लोक 14 कहता है कि वचन देहधारी हुआ।

तो, यह ए, बी, बी प्राइम, ए प्राइम है। शब्द, प्रकाश, प्रकाश के संदर्भ में अवतार। मुझे लगता है कि हम इसे रोशनी कह सकते हैं।

प्रकाश संसार में आ रहा था, श्लोक 9. और फिर, श्लोक 14 में, शब्द देहधारी हुआ। चियास्म, उलटी समानांतरता, इस मार्ग को एक बंडल में बांधने का काम करती है, जैसे कि यह थी। और यह प्रस्तावना का मुख्य फोकस देता है, जो शाश्वत पुत्र का अवतार है जिसे शब्द और प्रकाश कहा जाता है, जो ईश्वर के प्रकटकर्ता के रूप में अपनी भूमिका के बारे में बात करता है।

और यहाँ पहले पाँच पदों में हमने जो दिखाया है वह यह है कि उसने मनुष्य बनने से पहले ही परमेश्वर को प्रकट कर दिया था। इसलिए, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि देहधारी शब्द के रूप में, दुनिया की रोशनी के रूप में, वह परमेश्वर को ईश्वर-मनुष्य के रूप में प्रकट करता है। वास्तव में, यूहन्ना के मसीह-विद्या के दो बड़े विषय उनमें से कई हैं, लेकिन उसके दो बड़े विषय हैं मसीह, देहधारी शब्द जीवनदाता है।

वह अनंत जीवन को उपहार के रूप में देता है। मैं अपनी भेड़ों को अनंत जीवन देता हूँ। वे कभी नष्ट नहीं होंगी।

कोई भी उन्हें मेरे हाथ से नहीं छीन सकता, यूहन्ना 10:27 और उसके बाद, 28 और उसके बाद। और फिर वह परमेश्वर का प्रकटकर्ता है। जो शब्द मैं तुमसे कहता हूँ वे मेरे अपने नहीं हैं, वे उस पिता के शब्द हैं जिसने मुझे भेजा है।

लगातार, ये दो विषय गूँजते रहते हैं। यीशु जीवनदाता के रूप में, यीशु ईश्वर के प्रकटकर्ता के रूप में। और प्रस्तावना जो दिखाती है, वह यह नहीं है कि, जैसा कि बुल्टमैन ने दावा किया, रहस्यमय धर्मों या उस जैसी किसी चीज़, हेलेनिस्टिक दर्शन के साथ संपर्क है।

नहीं, यह सृष्टि के वृत्तांत में पुराने नियम की नींव है जो दिखाती है कि शब्द परमेश्वर का प्रकटकर्ता है। उसने जो चीज़ें बनाईं, उनके द्वारा परमेश्वर को प्रकट किया, एक तीन, सामान्य प्रकाशन, यह दर्शाता है कि सृष्टि में शब्द पिता का एजेंट है। दूसरे शब्दों में, मनुष्य बनने से पहले शब्द जीवनदाता था।

उसने सृष्टि की सभी चीज़ों को जीवन दिया, यूहन्ना एक तीन। शब्द प्रकाश वाहक था, अगर आप चाहें तो, उन चीज़ों में परमेश्वर का प्रकटकर्ता था जिनके लिए उसने एक बनाया था। इसलिए, हमें आश्चर्य नहीं है कि देहधारी शब्द परमेश्वर का प्रकटकर्ता है, दुनिया का प्रकाश है, और वह जीवनदाता है, वह जो उस पर विश्वास करने वाले हर व्यक्ति को अनंत जीवन देता है।

मैं फिर से नोट्स पर आता हूँ, पहले व्याख्या के अपने पैटर्न का पालन करता हूँ और फिर नोट्स से सारांश देता हूँ। सृष्टि से पहले पिता के साथ रहने वाला शब्द ही सब कुछ का निर्माता है। वह ईश्वर है, और उसके भीतर अनन्त जीवन सभी सृजित जीवन का स्रोत है।

सृष्टि में जारी वचन में यह जीवन मनुष्यों का प्रकाश है, यूहन्ना 1:4, लोगों के लिए परमेश्वर का प्रकाशन। यह बाहरी सामान्य प्रकाशन सृष्टि के समय से ही परमेश्वर को प्रकट करना जारी रखता है, पद पाँच। पतन के बाद से, अंधकार के आयाम के साथ पूर्वकल्पित, लोग सृष्टि में परमेश्वर के प्रकाशन से लड़ते हैं, लेकिन वे इसे भेदने, इसे बुझाने में सक्षम नहीं हैं।

पॉलिन भाषा का उपयोग करने के लिए, वे इसे दबाते हैं। जोहानिन भाषा का उपयोग करने के लिए, वे इसे दूर करना चाहते हैं, वे इससे लड़ते हैं। पतन के बाद से, अंधकार के आयाम के साथ पूर्वकल्पित, लोग और मनुष्य सृष्टि में ईश्वर के रहस्योद्घाटन से लड़ते हैं, लेकिन वे इसे खत्म करने में सक्षम नहीं हैं।

परमेश्वर का पुत्र सच्चा प्रकाश है, जो सबको प्रकाश देता है, श्लोक नौ। सच्चा प्रकाश, जो सबको प्रकाश देता है, संसार में आ रहा था। श्लोक नौ पुत्र के अवतार की बात करता है।

सच्चा प्रकाश ग्रीक पेरिफ्रास्टिक निर्देश के आधार पर दुनिया में आ रहा था, दुनिया में आ रहा था, आगे सच्चे प्रकाश का वर्णन करता है, बताता है कि उसने क्या किया। और यह बहुत मायने रखता है, क्योंकि फिर श्लोक 10 कहता है कि वह दुनिया में था। श्लोक नौ कहता है कि वह दुनिया में कैसे आया।

श्लोक 10 और 11 और 12 और 13 में दुनिया में उसके होने के परिणाम दिखाए गए हैं। दुखद रूप से, परिणाम अस्वीकृति, 10 और 11 और स्वीकृति, 12 और 13 हैं। परमेश्वर का पुत्र सच्चा प्रकाश है, जो सभी को प्रकाश देता है, श्लोक नौ।

हालाँकि वह सबको बनाता है और सबको सत्य देता है, फिर भी दुनिया उसे नहीं जानती या उसे स्वीकार नहीं करती, श्लोक 10 और 11। बेशक, कुछ लोग जानते हैं, लेकिन यूहन्ना का कहना है कि पहले 12 अध्यायों में यीशु के प्रति मुख्य प्रतिक्रिया, जिसमें संकेतों की पुस्तक और यीशु द्वारा खुद को दुनिया के सामने प्रकट करना शामिल है, प्रमुख प्रतिक्रिया अस्वीकृति है। अध्याय 13 में, वह ऊपरी कमरे का दरवाज़ा बंद कर देता है, दुनिया का दरवाज़ा बंद कर देता है, और अब, दुनिया के बजाय, यह शिष्य हैं, और वह अपने विदाई प्रवचनों, अपनी महान प्रार्थना, अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान में खुद को उनके सामने प्रकट करता है, और यह हमें चौथे सुसमाचार के अंत तक ले जाता है।

संक्षेप में, यूहन्ना सामान्य प्रकाशन की हमारी समझ में इज़ाफ़ा करता है। परमेश्वर का पुत्र परमेश्वर के आत्म-प्रकटीकरण का एजेंट है। प्रकाशन निरंतर है।

दुनिया रहस्योद्घाटन का विरोध करती है। रहस्योद्घाटन को उसके विरोधियों द्वारा समाप्त नहीं किया जा सकता। यह हमारा सारांश है, जो व्याख्यात्मक और मौखिक दोनों हैं, परमेश्वर के रहस्योद्घाटन और सृष्टि का।

जैसे-जैसे मैं सामान्य प्रकाशन के आंतरिक पहलू, हृदय में परमेश्वर की व्यवस्था, और प्रेरितों के काम की पुस्तक के अध्याय 14 और 17 में विधान के माध्यम से आगे बढ़ता हूँ, तब मैं सामान्य प्रकाशन का धर्मशास्त्र प्रस्तुत करूँगा, इन बातों को एक साथ लाऊँगा और सामान्य प्रकाशन के समय, स्थान, विषय-वस्तु, परिणामों को समझने में हमारी मदद करूँगा, लेकिन पहले हमें और अधिक जानकारी प्राप्त करने की आवश्यकता है। सबसे पहले, हमें आंतरिक सामान्य प्रकाशन के लिए शास्त्रीय पाठ पर जाने की आवश्यकता है, और यह रोमियों 2:12 से 16 में पाया जाता है। यह वास्तव में 1:32 में प्रत्याशित है, परमेश्वर ने मनुष्यों को अपमानजनक वासनाओं के लिए छोड़ दिया, पद 28।

उसने उन्हें एक पतित मन के हवाले कर दिया, रोमियों 1 के 1:28। वे सब प्रकार के अधर्म, बुराई, लोभ, द्वेष से भरे हुए थे, पद 29। वे ईर्ष्या, हत्या, झगड़े, छल, दुर्भावना से भरे हुए हैं। वे गपशप करने वाले, बदनाम करने वाले, परमेश्वर से घृणा करने वाले, अहंकारी, अभिमानी, डींग मारने

वाले, बुराई के आविष्कारक, माता-पिता की अवज्ञा करने वाले, मूर्ख, विश्वासघाती, हृदयहीन, निर्दयी, हांफने वाले हैं।

क्या सूची है। और फिर इस आंतरिक सामान्य प्रकाशन के लिए यहाँ एक महत्वपूर्ण आयत है। हालाँकि रोमियों के 1:32 में, हालाँकि वे परमेश्वर के धर्मी आदेश को जानते हैं कि जो लोग ऐसे काम करते हैं वे मृत्यु के योग्य हैं, फिर भी वे न केवल उन्हें करते हैं बल्कि उन लोगों को स्वीकृति भी देते हैं जो उनका अभ्यास करते हैं।

अध्याय दो की शुरुआत में वर्णित लोगों, कपटियों, और रोमियों 1 की अंतिम आयत में वर्णित लोगों के बीच एक स्पष्ट अंतर है। कपटी लोग दूसरों को वे काम करने के लिए प्रोत्साहित नहीं करते जो वे करते हैं। ओह, वे कपटी हैं। वे वही काम करते हैं, लेकिन पॉल वास्तव में उन पर गुस्सा था।

वह उन्हें बदतर मानता है क्योंकि वे दूसरों की आलोचना करते हैं, वे दूसरों की उन्हीं बातों की निंदा करते हैं जो वे करते हैं। खैर, 1:32 में ऐसा नहीं हो रहा है। 1:32 में, और यह हमारे आंतरिक सामान्य प्रकाशन का बिंदु है, हालाँकि वे जानते हैं कि जो लोग ये काम करते हैं वे मृत्यु के पात्र हैं, वे यह कैसे जानते हैं? यह हृदय पर लिखे परमेश्वर के नियम के कारण है।

लेकिन अभी मेरा मुद्दा यह है कि पाखंडी लोग दूसरों की निंदा करते हैं और खुद भी ऐसा करते हैं, मैं पॉल का उदाहरण दे रहा हूँ, जिससे पॉल के उनके व्यवहार का भयानक रूप से अपमान होता है। 1:32, ये पापी, वे ऐसा करते हैं। वे दूसरों की आलोचना नहीं करते।

वे दूसरों को उकसाते हैं। पाप और दुख संगति की तरह हैं, 1:32 के अनुसार। रोमियों दो। इसलिए, हे मनुष्य, तुम्हारे पास कोई बहाना नहीं है, तुम में से हर एक जो दूसरे पर निर्णय पारित करने में न्याय करता है, तुम खुद को दोषी ठहराते हो क्योंकि तुम, न्यायाधीश, उन्हीं चीजों का अभ्यास करते हो।

हम जानते हैं कि परमेश्वर का न्याय उन लोगों पर सही रूप से पड़ता है जो ऐसे काम करते हैं। इसलिए पौलुस उन दोनों की निंदा करता है जो खुलेआम पाप करते हैं और जो दूसरों को दोषी ठहराते हैं और खुद भी वही काम करते हैं। हे मनुष्य, क्या तू समझता है कि तू जो ऐसे काम करने वालों का न्याय करता है और फिर भी खुद वही करता है, तू परमेश्वर के न्याय से बच जाएगा? या तू उसकी दया, सहनशीलता और धीरज की दौलत पर भरोसा करता है, यह न जानते हुए कि परमेश्वर की दया तुझे पश्चाताप की ओर ले जाने के लिए है? लेकिन अपने कठोर और अपश्चातापी हृदय के कारण, तू क्रोध के दिन अपने लिए क्रोध इकट्ठा कर रहा है, जब परमेश्वर का धर्मी न्याय प्रकट होगा।

पॉल पुराने नियम की एक अवधारणा का हवाला देते हैं। उदाहरण के लिए, भजन 62:12 एक ऐसा स्थान है जो इसे आगे बढ़ाता है। यीशु भी यही बात कहते हैं।

परमेश्वर प्रत्येक को उसके कर्मों के अनुसार प्रतिफल देगा। उद्धार केवल अनुग्रह से, केवल विश्वास से, और केवल मसीह से होता है। न्याय हमेशा कर्मों या कामों पर आधारित होता है, जो यह प्रकट करता है कि किसी व्यक्ति ने मसीह में विश्वास किया है या नहीं।

विश्वास अदृश्य है। जेम्स कहते हैं, मुझे अपना विश्वास बिना कामों के दिखाओ, जेम्स 2, और मैं तुम्हें अपना विश्वास अपने कामों से दिखाऊंगा। खैर, केवल दूसरा ही संभव है।

आप कर्मों के बिना विश्वास नहीं दिखा सकते। आप विश्वास करने का दावा कर सकते हैं, लेकिन यह दावा या तो उचित है या जीवन, कर्मों या कार्यों द्वारा झूठा साबित होता है। किसी भी मामले में, आंतरिक सामान्य रहस्योद्घाटन, बाहरी सामान्य रहस्योद्घाटन के लिए टेक्स्टस क्लासिकस ईश्वर की दुनिया और सृष्टि में है।

वैसे, इसमें इंसान भी शामिल हैं। यहाँ एक ऐसा व्यक्ति है जो भगवान से नफरत करता है। मैं भगवान से दूर जाना चाहता हूँ।

वह एक गुफा में जाता है और इतना पीछे चला जाता है कि वहाँ कोई रोशनी नहीं होती। अहा! मैं इस बाहरी सामान्य रहस्योद्घाटन वाली बात से दूर जा रहा हूँ। भगवान मुझे यहाँ नहीं पकड़ सकते।

मुझे कोई सूर्य, तारे, चाँद, प्रकाश, आकाश दिखाई नहीं देता। अहा! गुफा की शांति में, दुर्भाग्य से, वह अपने ही दिल की धड़कन सुनता है। वह स्वयं ईश्वर का बाह्य सामान्य प्रकाशन है।

हाँ, यहाँ तक कि उसके शरीर के भीतर उसका हृदय, जिसे उसके शरीर का अंग माना जाता है, बाहरी सामान्य प्रकाशन है क्योंकि यह परमेश्वर के नियम, परमेश्वर की नैतिकता के बारे में नहीं बोल रहा है जो परमेश्वर की छवि के अंग के रूप में मानव हृदय पर लिखी गई है। इफिसियों 2:22 से 24. रोमियों 2 के 12 से 16 विस्तृत व्याख्या के योग्य हैं।

क्योंकि जितने लोगों ने बिना व्यवस्था के पाप किया है, वे भी बिना व्यवस्था के नाश होंगे। और जितने लोगों ने व्यवस्था के अधीन पाप किया है, उनका न्याय व्यवस्था के अनुसार होगा। ध्यान दें कि इसका परिणाम दोनों तरफ़ से दण्डित होना है।

पाप करने वाले अन्यजातियों की निंदा की जाती है। पौलुस कहता है कि पाप करने वाले यहूदियों को वास्तव में अधिक निंदा का सामना करना पड़ता है, लेकिन यहाँ ऐसा नहीं है। आयत 13, क्योंकि परमेश्वर के सामने व्यवस्था के सुनने वाले धर्मी नहीं हैं, बल्कि व्यवस्था पर चलने वाले ही धर्मी ठहराए जाएँगे।

क्या पौलुस कर्मों के द्वारा औचित्य सिद्ध करने की शिक्षा दे रहा है? यह असंभव है। यह असंभव है। और सुसमाचारी विद्वान उन आयतों के अर्थ के बारे में असहमत हैं जिन्हें मैंने छोड़ दिया, जिनका सारांश आयत 13 में भी दिया गया है।

जॉन मुरे, टॉम श्राइनर और अन्य अच्छे लोगों का कहना है कि कानून का पालन करने वाले उन लोगों की बात करते हैं जिन्हें ईश्वर की कृपा से मुफ्त में बचाया गया है, जो फिर ईश्वर की आज्ञा मानते हैं। डग मू, जिनकी रोमियों पर टिप्पणी मेरी पसंदीदा है, और मैं इस बिंदु को छोड़कर लगभग हर बात पर उनसे सहमत हूँ, कहते हैं कि नहीं, नहीं, यह सच्चा धर्मशास्त्र है, लेकिन यह उन आयतों की सही व्याख्या नहीं है जिन्हें मैंने छोड़ दिया। मैंने 7 से 10 या आयत 13 में 7 से 10 के इस सारांश को छोड़ दिया।

बल्कि, यह एक असंभव मानक दे रहा है जिसे कोई भी प्राप्त नहीं कर सकता। किसी भी मामले में, हमें व्याख्या और धर्मशास्त्र के बीच अंतर करने की आवश्यकता है। छंदों का मतलब दोनों चीजें नहीं हैं, ठीक है? केवल एक व्याख्या सही है।

या तो मू सही है, और 2:7 से 10, और 2:13 कह रहे हैं कि अगर लोग व्यवस्था का पालन करते, तो वे इस तरह से बच जाते, लेकिन कोई भी ऐसा नहीं करता, जैसा कि पॉल बाद में स्पष्ट करता है। या यह व्याख्या सही है? वास्तव में, परमेश्वर की कृपा से, केवल परमेश्वर की कृपा से बचाए गए लोग हैं, जो परमेश्वर की कृपा से महिमा, सम्मान और अमरता चाहते हैं, लेकिन फिर भी, उनमें से केवल एक व्याख्या सही है।

वे दोनों सही नहीं हो सकते, लेकिन दोनों का धर्मशास्त्र सही है। मानक असंभव है, और यह सच है कि अच्छे कामों से उद्धार नहीं होता, लेकिन जिन्हें परमेश्वर बचाता है वे अच्छे काम करते हैं। न केवल याकूब यह कहता है, बल्कि पौलुस भी यही कहता है।

उन्होंने तीतुस में कई बार यह कहा है। उन्होंने इफिसियों 2, 8 से 10 में भी यही कहा है। इसलिए, सत्य वह नहीं है जिस पर बहस हो सकती है।

व्याख्या पर बहस हो सकती है, लेकिन इसके बावजूद, मुद्दा अभी भी कायम है, यानी आंतरिक सामान्य प्रकाशन की यह धारणा। श्लोक 14, क्योंकि जब गैर-यहूदी, जिनके पास व्यवस्था नहीं है, इसका मतलब है मूसा, टोरा, स्वभाव से वही करते हैं जो व्यवस्था की मांग करती है। वे खुद के लिए एक व्यवस्था हैं, भले ही उनके पास व्यवस्था न हो।

दो बार, वह कहता है कि उनके पास मूसा का कानून नहीं है। फिर भी, स्वभाव से, भगवान ने उन्हें नैतिकता की भावना दी है, और कभी-कभी वे सही काम करते हैं। अधिकांश आदिम लोग हत्या या अपने पड़ोसी की पत्नी को ले जाने को बर्दाश्त नहीं करते।

ओह, मैं समझता हूँ कि उनके नैतिक नियम विकृत हैं। और कुछ जनजातियों में, छल को एक गुण के रूप में महत्व दिया जाता है, और इसी तरह की अन्य बातें। मेरा मतलब है, वहाँ अजीब चीजें चल रही हैं।

सभ्य समाज में, शायद अजीबोगरीब चीजें चल रही हों। लेकिन कभी-कभी, कानून के बिना लोग सही काम करते हैं। पॉल कहते हैं कि जब वे ऐसा करते हैं, तो वे खुद के लिए कानून बन जाते हैं।

वे खुद के लिए और दूसरे लोगों के लिए ईश्वर का रहस्योद्घाटन हैं। यहाँ एक जोड़ा है। वे बचाए नहीं गए हैं।

वे ननों के प्रसिद्ध समूह, NONES का हिस्सा हैं। किसी भी तरह की धार्मिक प्रतिबद्धता नहीं, फिर भी वे एक-दूसरे से प्यार करते हैं। वे एक-दूसरे के प्रति वफ़ादार हैं।

दोनों में से कोई भी किसी दूसरे साथी के प्रति बेवफ़ा नहीं है। इसके अलावा, वे अपने बच्चों से प्यार करते हैं, और उन्हें प्रशिक्षित करते हैं, उनके साथ समय बिताते हैं, उनसे प्यार करते हैं, और उन्हें सुधारते हैं। उस विवाह और उस घर में आशीर्वाद होगा क्योंकि यह परमेश्वर की दुनिया है, और परमेश्वर के सिद्धांत सत्य हैं।

और उन्हें यह जाने बिना भी, वे विवाह में प्रतिबद्धता, बच्चों को प्रशिक्षित करने, सम्मानजनक और अच्छे नागरिक बनने आदि के परमेश्वर के सिद्धांतों का रहस्योद्घाटन हैं। आप देखिए, जब गैर-यहूदी लोग जिनके पास स्वभाव से मूसा का कानून नहीं है, वे वही करते हैं जो कानून की आवश्यकता है, हाँ, मूसा का कानून जो माँगता है, वे खुद के लिए एक कानून हैं, भले ही उनके पास मूसा का कानून न हो। वे दिखाते हैं कि मूसा के कानून का काम उनके दिलों पर लिखा हुआ है, जबकि उनका विवेक भी गवाही देता है, और उनके परस्पर विरोधी विचार उन्हें दोषी ठहराते हैं या यहाँ तक कि उन्हें माफ़ भी करते हैं।

और यह सब प्रकाश में आएगा, इस अर्थ में कि जिस दिन, मेरे सुसमाचार के अनुसार, परमेश्वर मसीह यीशु के द्वारा मनुष्यों के रहस्यों का न्याय करेगा, वह उन यहूदियों को फटकारेगा जिनके पास व्यवस्था है और जो पाखंडी हैं। वे व्यवस्था का पालन नहीं करते।

वे अन्यजातियों पर बुरे काम करने का आरोप लगाते हैं, और वे भी वही काम करते हैं। कम से कम अपने दिलों में और कभी-कभी बाहरी तौर पर। अन्यजातियों के पास परमेश्वर का वचन नहीं होता, लेकिन वे कभी-कभी वही करते हैं जो परमेश्वर का वचन उनसे अपेक्षा करता है।

वे परमेश्वर को महिमा नहीं देते। वे यह भी नहीं जानते कि वे वही कर रहे हैं जो परमेश्वर उनसे करवाना चाहता है, हालाँकि एक अर्थ में, वे ऐसा करते हैं, और यह अंश के बिंदु का हिस्सा है। लेकिन वे परमेश्वर को खुलकर श्रेय नहीं देते।

ओह, मैं अपने साथी के प्रति वफ़ादार हूँ क्योंकि परमेश्वर ने कहा है, तुम व्यभिचार नहीं करोगे। और यीशु ने कहा है कि तुम्हें अपने दिल में भी व्यभिचार नहीं करना चाहिए। नहीं, ऐसा नहीं हो रहा है।

सहज रूप से, उनके दिलों पर लिखे परमेश्वर के नियम के कारण, वे अपने जीवनसाथी के प्रति वफ़ादार होते हैं क्योंकि यह काम करता है। यह उनके विवाह को बेहतर बनाता है। उनका प्रेम जीवन बेहतर होता है, बजाय इसके कि वे इधर-उधर भागते रहते।

आह, अन्यजातियों ने दिखाया कि व्यवस्था का कार्य उनके हृदय पर लिखा हुआ है। यह एक आंतरिक, सामान्य रहस्योद्घाटन है। यह केवल संतों के लिए नहीं है।

हर कोई, सभी पापी। आदम और हव्वा के पास पतन से पहले यह था, और पतन के बाद, मनुष्य अभी भी रहस्योद्घाटन और सृष्टि प्राप्त करते हैं, और उन्हें अभी भी परमेश्वर का रहस्योद्घाटन मिलता है, परमेश्वर का नियम उनके हृदय में लिखा हुआ है। इसका मतलब है कि हम मूल पवित्रता और धार्मिकता में बनाए गए थे, इफिसियों 4, 22 से 24।

आदम और हव्वा निर्दोष प्राणी नहीं थे। वे पवित्र ईश्वर के साथ संगति में पवित्र प्राणी थे। यानी मानवता नैतिक है, एक नैतिक घटक है।

अब, पतन में, हम अनैतिक हैं, और यही इसका मतलब है जब यह कहता है। हमारे पास यह विवेक है। विवेक एक तरह का माप है, एक माप, एक बैरोमीटर, एक थर्मामीटर जो हृदय में ईश्वर के नियम के साथ चलता है, और कभी-कभी यह कहता है, अच्छा, अच्छा, हाँ।

कभी-कभी यह कहता है, नहीं, नहीं, यह हमें चोट पहुँचाता है। अब, यह जटिल है। अपने विवेक का इतना दुरुपयोग करना संभव है कि यह अब काम न करे, लेकिन यह अभी भी कुछ समय के लिए सभी के लिए काम करता है, और कभी-कभी हमारी चेतना हाँ कहती है, और कभी-कभी यह नहीं कहती है।

हालाँकि, महान धर्मशास्त्री जिमिनी क्रिकेट का कहना है कि किसी को अपने धर्म में ही नहीं रहना चाहिए क्योंकि यह सच नहीं है कि आपको हमेशा अपने विवेक को अपना मार्गदर्शक बनाना चाहिए। यह तभी अच्छा है जब यह आपको सूट करे। यह भी मुश्किल हो सकता है।

रोमियों 14 के अंत में, जो कुछ भी विश्वास से नहीं है वह पाप है, इसलिए केल्विन कहते हैं कि कानूनवादी उस जगह पर पहुँच सकते हैं जहाँ अगर आपको लगता है कि पानी पीना पाप है, तो यह पाप है, और यह होगा। पानी पीना, यह सही है। जो कुछ भी विश्वास से नहीं है वह पाप है, और यह हास्यास्पद है।

मैं समझता हूँ, लेकिन यह पाप होगा, और इसका उपाय विवेक को शिक्षित करना होगा और यह कहना होगा कि पानी पीना पाप नहीं है, और शायद कुछ अन्य बातें जो कानूनविदों को पसंद हैं, जो अभी मेरा मुद्दा नहीं है। वैसे भी, भगवान ने अपने कानून को मानव हृदय पर लिखा है, और हम सहज रूप से सही और गलत को जानते हैं। ओह, सीएस लुईस यहाँ हमारी मदद करते हैं।

हम कुछ स्थितियों में इस मामले में वाकई अच्छे हैं। लेकिन, हम हमेशा इसमें इतने अच्छे नहीं होते जब हम कुछ गलत करते हैं और उसे तर्कसंगत बना देते हैं। खैर, हर कोई यही सोच रहा है कि ओह, कोई मुझे देखने नहीं जा रहा है।

मैं किसी को चोट नहीं पहुँचाऊँगा, लेकिन किसी और को मेरे क्षेत्र में अपराध करने दूँगा। उन्हें मेरे खिलाफ़ पाप करने दूँगा, और यार, मेरी अंतरात्मा पागल हो जाएगी। अलार्म बजता है।

तुम खुद को क्या समझते हो? तुम क्या कर रहे हो? तुम नहीं जानते कि मैं कौन हूँ, तुम जानते हो, ओह माय वर्ड। यानी, हमारा विवेक हमारे खिलाफ़ उल्लंघनों के प्रति बहुत संवेदनशील है। इतना

नहीं जब हम दूसरों के खिलाफ़ बैठते हैं, लेकिन भगवान ने खुद को मानव हृदय में प्रकट किया है, और यह उतना ही उसका रहस्योद्घाटन है जितना कि सृष्टि और उसके सामान्य में उसका रहस्योद्घाटन है।

अब हर इंसान के दिल पर परमेश्वर का नियम लिखा हुआ है। पापी इसके साथ अलग-अलग काम करते हैं, और जब हम अपने अगले व्याख्यान में वापस आएं, तो हम फिर से पैटर्न का पालन करेंगे और इनमें से कुछ चीजों को स्पष्ट और संहिताबद्ध करने के लिए सारांश पढ़ेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा प्रकाशितवाक्य और पवित्र शास्त्र पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 7 है, बाह्य सामान्य रहस्योद्घाटन, रोमियों 1:18-25 और यूहन्ना 1:3-9। आंतरिक सामान्य रहस्योद्घाटन, रोमियों 1:32 और 2:12-16।